Bihar Board Class 7 Social Science History Notes Chapter 4 मुगल साम्राज्य

मुगल साम्राज्य

पाठ का सार संक्षेप

दिल्ली सल्तनत कमजोर पड़ गया । इसका लाभ उठाकर लादियों ने सल्तनत पर अधिकार कर लिया। बाबर एक बडी सेना के साथ बन्दुक और तोपखानों से लैस होकर दिल्ली विजय के लिये चल पड़ा । उस समय दिल्ली सल्तनत का शासक इब्राहिम लोदी था । पानीपत के मैदान में दोनों की मुठभेड़ हुई । अधिक सैनिक के बावजूद इब्राहिम लोदी 'तोपों' का मुकाबला नहीं कर सका और युद्ध में मारा गया । 1526 में दिल्ली सल्तनत पर बाबर का अधि कार हो गया । इसके पहले बाबर काबुल और कंधार का शासक था । उसके

अधिकांश अधिकारी लूट-पाट मचाकर काबुल लौट जाना चाहते थे । लेकिन 'बाबर ने उन्हें समझा-बुझा कर रोका और दिल्ली पर मुगल शासन की नींव रखी । इसके बाद उसनं 1527 में चित्तौड़ के शासक राणा सांगा तथा 1528 में चन्देरी के राजा मेदिनी राय और 1529 में पूर्वी भारत के अफगानों को हराया।

शेर खाँ, जो बिहार के सासाराम में राजधानी बनाकर शासन करता था, हारने के बाद मुगलों के यहाँ ही नौकरी कर ली । इस अवधि में वह मुगलों के कार्यकलापों का पैनी दृष्टि से निगरानी कर रहा था।

हुमायूँ जो शेरशाह से हारकर भारत में ही लुका-छिपी खेल रहा था, दिल्ली पर 1555 में फिर अधिकार जमा लिया । लेकिन वह भी अधिक दिनों. तक जीवित नहीं रहा । उसका बेटा अकबर मात्र 13 वर्ष की आयु में दिल्ली की तख्त पर बैठा । शासन का काम-काज उसका मामा बैरम खाँ चला रहा था । 17 वर्ष की उम्र में अकबर ने शासन सूत्र अपने हाथ में ले लिया । सर्वप्रथम उसने अपने राज्य की सीमा बढ़ाने और वहाँ अपनी स्थिति मजबूत करने में लग गया।

1556 से 1576 के बीच उसने अपने राज्य को काफी बढ़ा लिया। इसके अगले दस वषों तक वह राजपूतों से मित्रता बढ़ाने और इससे भी नहीं हुआ तो आक्रमण करके राजपूताने में अपनी स्थिति मजबूत की । उसने राजपूतों से वैवाहिक सम्बंध भी कायम किये । अनेक राजपूत सरदारों को ऊँचे ओहदे दे दिये । चित्तौड़ का संघर्ष बहुत महत्त्व का था । वहाँ का शासक महाराणा प्रताप हार गया किन्तु उसने जीवन पर अकबर की अधीनता कबूल. नहीं की । चित्तौड़ के बाद अकबर ने रणथम्भौर तथा गुजरात को भी जीत लिया । यह व्यापारिक केन्द्र था, जहां से उसे अचछी आय प्राप्त होने लगी।

बंगाल और बिहार अभी भी अफगानों के अधिकार में थे । भीषण युद्ध के' बाद उसने इन दोनों को अपने राज्य में मिलाया । दक्षिण में भी उसने कुछ क्षेत्रों को अपने राज्य में मिलाया । वह और आगे बढ़ना चाहता था। लेकिन 1602 में सलीम के विद्रोह के कारण उसे अपने कदम रोकने पड़े। 1605 में अकबर की मृत्यु हो गई । उसकी मृत्यु के पहले तक मुगल साम्राज्य काफी फैल चुका था

https://www.evidyarthi.in/

शाहजहाँ के चार पुत्र थे, दारा, शुजा, औरंगजेब और मुराद । अपनी बीमारी के चलते वह दारा को अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया । यह बात तीनों भाइयों को नागवार गुजरी । औरंगजेब ने छल-कपट से अपने तीनों भाइयों को मौत के घाट उतार दिया और पिता को कैदकर स्वयं बादशाह बन गया।

औरंगजेब का शासक बनना मुगल साम्राज्य के लिए शुभ नहीं रहा । हालांकि वह अच्छा लड़ाका था और अपना अधिक समय दक्षिण विजय में ही लगाए रखा । इधर उत्तर में उसके सूबेदार अपने को स्वतंत्र घोषित करने के फिराक में रहने लगे । फलतः राज्य अस्त-व्यस्त हो गया । 1707 में औरंगजेब की मृत्यु दक्षिण भारत में ही हो गई । अब मुगल दरबार षड्यंत्रों का अड्डा बन गया । बंगाल तथा अवध अपने को स्वतंत्र घोषित कर लिये। सभी सूबों के सूबेदार अब स्वतंत्र शासक के रूप में काम करने लगे ।

यहाँ की कमजोरी को भाँप 1739 में ईरान के शासक नादिरशाह ने आक्रमण कर दिल्ली-को तहस-नहस कर दिया । अब्दाली ने भी आक्रमण किया जिसे मुगल झेल नहीं पाये।

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/